Dr. SUDHA PANDEY
Asstt Prof Deptt of
Sanskrit
SOHRA COLLEGE, BIHAR-SHARIF
NALANDA

Sub :- Sanskrit
B.A Hons - Part I
PAPER I

संस्कृत साहित्य का इतिहास
रामायण, महाभारत

Scanned with CamScanner

B.A Part I Hons.
Sanskrit Paper I
संस्कृत साहित्य का इतिहास

प्रश्न 1 रामायण का काल-संबंधी निर्णय करें।
अथवा रामायण के रचनाकाल पर प्रकाश डालें। रामायण के रचनाकाल का निर्धारण करें।

उत्तर रामायण का रचना-काल →

संस्कृत साहित्य में वाल्मीकि रामायण को आदिकाव्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। संपूर्ण भूमण्डल पर इसकी वेद-तुल्य ही प्रतिष्ठा है। इसलिए महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है। यह काल भारत के लिए पूज्य एवं गौरव का काल है। यह भारतीय साहित्य, संस्कृति एवं दर्शन का प्रतिनिधि ग्रन्थ है। इसके प्रणयन के विषय में लोक प्रसिद्ध है कि एक बार तमसा नदी के तट पर विचरण करते हुए महर्षि वाल्मीकि प्रेम-क्रीड़ा में निमग्न क्रौञ्च पक्षी के जोड़े को भाव विभोर होकर देख रहे थे। सहसा एक बहेलिए ने तीर चलाकर क्रौञ्च की इह-लीला समाप्त कर दी। क्रौञ्च के करुण विलाप को सुनकर कवि के मुख से निम्नश्लोक निकल पड़ा।

"मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥"

लौकिक साहित्य का आरम्भ वाल्मीकि के ही द्वारा हुआ है क्योंकि समस्त वाग्देवता उपासक कविगणों ने कवि श्रेष्ठ को आदिगुरु मानकर आदर सहित छन्दोबद्ध नमस्कार किया है। भारतीय साहित्य के इतिहास में यह शुभ दिन युग-युगान्तर तक स्मरण किया जाता रहेगा। भारतीय संस्कृति का जितना सुन्दर समुज्ज्वल एवं स्वाभाविक रूप इस महाकाव्य में अंकित किया गया है उतना किसी अन्य देश के महाकाव्य में नहीं किया गया।

मनुष्य के चरित्र आदर्श की स्थापना के लिए महर्षि वाल्मीकि ने इस महाकाव्य की रचना की। इस आदिकाव्य को चतुर्विंशति सहस्र संहिता भी कहा जाता है। अर्थात इसके 24 हजार श्लोक हैं।

वाल्मीकि रामायण का रचनाकाल संदिग्ध है तथा विचारक इस संबंध में पृथक-पृथक मत व्यक्त करते हैं। संस्कृत कवियों की यह विशेषता रही है कि उनकी कृतियों से तो भली-भाँति परिचित हो जाते हैं, किन्तु उनके ऐतिहासिक एवं सामाजिक व्यक्तित्व का जो प्रश्न रहता है वह असंख्य चरितों के मध्य अविच्छिन्न पड़ा रहता है। उसका नाम मात्र ही उनके व्यक्तित्व का संकेत देता है। ऐसे ही हमारे आदिकवि वाल्मीकि भी हैं। जब महर्षि वाल्मीकि

वाल्मीकि का स्थिति-काल ही अज्ञात या विवादास्पद है तो उनके ग्रंथ का रचनाकाल भी विवादास्पद रहेगा ही। इसके रचनाकाल के संबंध में प्रो० याकोबी इसे 800-600 ई० पूर्व का मानते हैं।

श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय ने वाल्मीकि रामायण के संबंध में निम्न सात सिद्धान्तों को व्यक्त किया है:—

(1) रामायण के बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड के निर्माण तथा अयोध्या काण्ड से सुन्दर काण्ड तक की रचना में समय का पर्याप्त अन्तर है। बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है, जिससे वाल्मीकि एक पौराणिक व्यक्ति के रूप में माने जाते हैं। इससे यह विदित होता है कि वाल्मीकि कृत रामायण में बालकाण्ड व उत्तरकाण्ड नहीं थे।

2) महाभारत के कई आख्यान रामायण के आधार पर ही निर्मित है और महाभारत में वाल्मीकि का उल्लेख एक पौराणिक मुनि के रूप में आया है। अतः विदित होता है कि जिस समय महाभारत ने अपना वर्तमान रूप धारण किया, उस समय 'रामायण' की गणना एक प्राचीन ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी।

3) महाभारत का अंतिम संस्करण 400 ई० में और रामायण का इससे पूर्व 200 ई० में ही पूरा हो चुका था।

4) बौद्ध त्रिपिटकों में भी रामचरित-संबंधी प्राचीनतम रूप विद्यमान है—जिसको चारणों ने पहले ही गाकर प्रचारित किया था।

5) रामायण बौद्ध धर्म एवं ग्रीक प्रभाव से सर्वथा अछूती है।

6) रामायण की मूल कथा बौद्ध धर्म के आविर्भाव से पूर्व की है और उसकी रचना लगभग 500 ई० पू० में हो चुकी थी।

कुछ विद्वान् यह मानते हैं कि महर्षि वाल्मीकि अपने चरित नायक श्री राम के ही समकालीन थे तथा दोनों युग में हुए थे, पर यह एक भ्रम है। लोकमान्य तिलक ने भी ज्योतिषशास्त्र की गणना के आधार पर इसकी रचना काल 1600 से 1800 ई० पूर्व तक माना है। ऐसी स्थिति पुराणों द्वारा सीमांकन के कारण है जो निश्चय ही अतिशयोक्तिपूर्ण है। भारतीय विद्वानों के साथ-साथ पाश्चात्य विद्वानों ने भी इसके रचना काल पर अपने-अपने मत व्यक्त किये हैं। सैक्डानल महोदय ने वर्षों तक रामायण का गंभीर अध्ययन किया तथा रामायण के वर्ण्य-विषय को दो भागों में विभक्त किया है।—

(i) अयोध्या की घटनाएँ, जिनके केन्द्र दशरथ हैं।

(ii) दण्डकारण्य एवं रावण से संबंध घटनाएँ।

उन्होंने अयोध्या की घटनाओं को ऐतिहासिक माना है तथा उनका संबंध किसी निर्वासित इक्ष्वाकुवंशीय राजकुमार से किया तथा दण्डकारण्य एवं रावण से संबंध कथाओं का स्रोत वेदों में वर्णित देवकथा को मानते हैं। उन्होंने वाल्मीकि द्वारा प्रणीत 'मूल रामायण' की ओर संकेत किया है तथा वर्तमान उपलब्ध रामायण को उसी का अतिवर्द्धित संस्करण माना है। उनके अनुसार

मूल रामायण की रचना 500-400 ई॰ पू॰ में हो चुकी थी।

ए॰ बी॰ कीथ महोदय ने चतुर्थ शताब्दी का काल रामायण की रचना को माना है यहाँ तक कि प्रो॰ वेबर ने तो रामायण का रचनाकाल महाकवि होमर तथा महाभारत के पश्चात् माना है। अन्य विद्वानों में वेलनकर ने 200 ई॰ पू॰ तक विन्टरनित्स ने 400 ई॰ पू॰ तक, जी॰ गौरेसियो ने 1200 ई॰ पू॰ तक बलदेव उपाध्याय ने 500 ई॰ पू॰ तक तथा राहुल सांकृत्यायन ने 150 से 200 ई॰ शून्क माना है। चिन्तामणि विनायक वैद्य ने तो महाभारत की भाँति रामायण के भी दो रूप माने हैं। उनका विचार है कि रामायण के प्राचीनतम रूप की रचना 1200 ई॰ पू॰ तथा दूसरे रूप की रचना 500 ई॰ पू॰ में हुई है, पर सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, वैद्यजी की इस विचार-कल्पना को महत्वहीन मानते हैं।

डॉ॰ भण्डारकर रामायण का रचनाकाल पाणिनि के बाद ही मानते हैं। कुछ विद्वान वाल्मीकि को राम का समकालीन नहीं मानते हैं जबकि रामायण में वाल्मीकि के समकालीन होने का स्पष्ट वर्णन है। भारतीय परम्परा में भी वाल्मीकि को रामायण का प्रणेता तथा आदिकवि माना जाता है, ~~भारतीय परम्परा में भी वाल्मीकि को रामायण का प्रणेता तथा~~ साथ ही उन्हें राम का समकालीन भी कहा गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि रामायण का काल-निर्णय-संबंधी विश्लेषण विद्वानों के विवाद का विषय एक लम्बी अवधि तक बना रहा। श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय की भाँति बलदेव उपाध्याय तथा वाचस्पति गैरोला भी रामायण का रचनाकाल 500 ई॰ पू॰ मानते हैं। उनका कथन है कि रामायण के रचनाकाल की समीक्षा अन्तःसाक्ष्य के आधार पर करनी चाहिए, जो इस प्रकार है।—

प्रथमतः, बौद्ध साहित्य में जिसे एक सामान्य ग्राम पाटिल नाम दिया गया है उसे मगधराज अजातशत्रु ने 500 ई॰ पू॰ में एक नगर के रूप में बसाया था तथा वज्जि लोगों के आक्रमण से रक्षा के लिए गंगा-सोन के संगम पर एक परकोटा भी बनवाया था।

रामायण में सोन व गंगा के संगम के प्रसंग में पाटलिपुत्र का कहीं भी उल्लेख नहीं प्राप्त होता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि पाटलीपुत्र नामकरण (500 ई॰ पू॰) से पूर्व ही रामायण की रचना हो चुकी थी।

दूसरे, कोशल जनपद की राजधानी 'रामायण' में अयोध्या बतई गई है। जैन व बौद्ध साहित्यों में उसे 'साकेत' नाम से पुकारा ~~जाता है~~ गया है। लव ने अपनी सज राजधानी श्रावस्ती में बसाई थी। इस दृष्टि से भी यह सिद्ध होता है कि रामायण की रचना उसी समय हो चुकी थी, जब कोशल की राजधानी श्रावस्ती न होकर अयोध्या

थी। श्रावस्ती को राजधानी के रूप में स्थापित होने का उल्लेख आगे मिलता है। कौशल नरेश प्रसेनजित श्रावस्ती में ही राज्य करते थे। अतः रामायण प्राचीन ग्रंथ है।

तीसरे, बुद्ध के समय में जिस वैशाल राजतंत्र का उल्लेख मिलता है रामायण में उसका उल्लेख 'विशाला' और 'मिथिला' दो राजतंत्रों के रूप में है इक्ष्वाकु वंश रानी अलम्बुसा से उत्पन्न पुत्र विशाल के द्वारा बसाये जाने के कारण उसका नाम 'विशाला' हुआ। चंद्रवंशी राजा सीरध्वज मिथिला में राज्य करते थे। अतः रामायण की रचना तथागत बुद्ध के पहले होना इससे सिद्ध होता है।

चौथे, रामायण के बालकाण्ड के अनुसार यह सिद्ध होता है कि उत्तरी भारत में आर्य जातियों के कोशल, अंग, कान्यकुब्ज, मगध, मिथिला आदि अनेक छोटे-छोटे राज्य थे। यह राजनीतिक स्थिति भगवान बुद्ध के पूर्व की थी ही है। अतः बौद्धों के पहले रामायण की रचना हो चुकी थी।

उपर्युक्त अन्तः साक्ष्यों के आधार पर श्री वाचस्पति गैरोला रामायण का रचनाकाल 500 ई० पू० मानते हैं। परन्तु श्री बलदेव उपाध्याय इसका रचनाकाल अन्तः साक्ष्यों के साथ-साथ बाह्य प्रमाणों के आधार पर ईसा पूर्व निर्धारित करते हैं।

उपर्युक्त सभी मतों पर विचार करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रामायण की रचना बुद्ध से पहले हुई थी और इसका रचना काल 500 ई० पू० मानना ही अधिक समीचीन है।

=

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1: महाभारत के रचना-काल तथा वर्ण्य-विषय के बारे में समीक्षा कीजिए।

उत्तर: महाभारत के महत्व के विषय में भारतीय दृष्टिकोण यह है कि महाभारत चारों फलों को देने वाला, सम्पूर्ण कार्यों का साधक तथा कोकिल के मधुर गान की तरह पूर्णतया तापनाशक है इसके ~~विजय~~ विजयगान जीवन में विजय लाभ प्राप्त कराते हैं और यह भारतीय संस्कृति का अत्यन्त भव्यरूप उपस्थित करता है। शान्तिमय जीवन बिताने के लिए प्रेरणा देने वाला यह महाकाव्य जीवन की समस्त जटिल समस्याओं को सुलझाने वाला है। इसे पंचम वेद के नाम से भी अभिहित किया गया है। यह नवनीत के सदृश्य अत्यन्त श्रेष्ठ माना गया है तथा उत्तरकालीन ऐतिहासिक काव्य का जन्मदाता एवं मूलाधार है। इसके उपाख्यान तत्कालीन ~~सामाजिक~~ सामाजिक जीवन के आचार-विचारों का स्पष्ट रूप उपस्थित करते हैं ~~और~~ और इसके अन्तर्गत आई हुई विदुर नीति लोक व्यवहार के आदर्श नियम प्रस्तुत करती है। साथ ही राजनीति का अत्यन्त विशद रूप इसमें विद्यमान है। इसमें ठीक ही कहा गया है:-

"अर्थ धर्मे च कामे च मोक्षे च ~~भर~~ भरतर्षभ: ।
यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तद्क्वचित् ॥"

परन्तु पाश्चात्य विद्वानों की राय में यह किसी इतिहास कला से अनभिज्ञ साहित्यिक व्यक्ति द्वारा असंबद्ध घटनाओं का संकलनमात्र है। वे लोग न तो इसे काव्यकला की दृष्टि से ही ठीक समझते हैं और न इतिहास की दृष्टि से ही इसका महत्व स्वीकार करते हैं। परन्तु इतना तो अवश्य ही मानते हैं कि इसमें वर्णित कौरव एवं पाण्डवों का युद्ध एक ऐतिहासिक सत्य है। कुछ भी हो, भले ही पाश्चात्य विद्वान इसे महत्व न दें और रामायण की भाँति यह सर्वप्रिय न हो, परन्तु इसके द्वारा हमें तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का अवश्य पता चल जाता है। और इसके उपदेशपूर्ण अंश न तो अपने प्रचलित उच्च प्रमाणों द्वारा इस ग्रन्थ को पंचमवेद नाम अन्वर्थ सिद्ध कर दिया है। अत: यह नीति धर्म तथा आचार-विचार की दृष्टि से भारतीय आत्मा का दर्पण है। वैसे ~~यह~~ यत्र-तत्र कवित्व भी पर्याप्त मात्रा में मिल जाता है।

Scanned with CamScanner

Page No. 7
Date: / /201

Date of Mahabharat → (महाभारत का समय) –

समस्त वैदिक साहित्य में महाभारत काव्य का कहीं भी नाम नहीं मिलता यद्यपि ब्राह्मण ग्रन्थों एवं उपनिषदों में इतिहास, पुराण, गाथा, नाराशंसी आदि मिलती है जो कुछ परिवर्तित रूप में महाभारत के अन्तर्गत भी विद्यमान हैं, फिर भी उक्त ग्रंथों में कुरुक्षेत्र की इस ऐतिहासिक प्रमुख घटना का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। ब्राह्मण ग्रन्थों में कुरुक्षेत्र का उल्लेख देव-मनुष्य के उत्सव के लिए आया है इससे सिद्ध है कि यदि भारत का युद्ध वैदिक काल में हुआ होता तो उसका उल्लेख किसी न किसी वैदिक ग्रन्थ में अवश्य होता। परीक्षित पुत्र जनमेजय तथा शकुन्तला पुत्र भरत का वर्णन ब्राह्मणों में मिलता है तथा अथर्ववेद के "कुन्ताप-गीतों" में परीक्षित के शान्त विचारों की प्रशंसा का उल्लेख है। यजुर्वेद के ग्रन्थों में यत्र-तत्र कुरु-पाँचाल तथा विचित्रवीर्य के पुत्र युधिष्ठिर के यज्ञों का वर्णन मिलता है। फिर भी समस्त वैदिक साहित्य में पाण्डु दुःशासन, युधिष्ठिर, दुर्योधन कर्ण आदि महाभारत के प्रमुख पात्रों का नाम तक नहीं मिलता। एक ब्राह्मण ग्रन्थ में अर्जुन का नाम अवश्य आया है परन्तु वह इन्द्र का गुप्त नाम है।

महाभारत में वर्णित कुरुक्षेत्र-युद्ध का वर्णन सर्वप्रथम सांख्यायन श्रौत सूत्र में मिलता है। आश्वलायन गृह्यसूत्रों में भी भारत या महाभारत का उल्लेख है तथा उसे वेदों के अध्ययन के बाद पठनीय बतलाया है। पाणिनि ने युधिष्ठिर, भीम, विदुर आदि शब्दों की सिद्धि के साथ-साथ महाभारत शब्द के उच्चारण के सम्बन्ध में भी अपनी अष्टाध्यायी में उल्लेख किया है, परन्तु पतंजलि ने सर्वप्रथम कौरव-पाण्डवों के युद्ध की ओर निर्देश किया है।

त्रिपिटकों में भी महाभारत का उल्लेख नहीं मिलता परन्तु जातक 'कथाओं' में जो 'गाथा' कहलाती है उनमें कृष्ण की कथा को विस्मृत कराने का प्रयत्न है। फिर भी 'हरिवंश' तथा महाभारत के "मौसलपर्व" की कहानियों का संकेत इनमें मिलता है। इतना ही नहीं जातकों में पाली भाषा के अन्तर्गत पाण्डवों, धनंजय, युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र, विदुर आदि नामों का उल्लेख मिलता है और द्रौपदी, धनंजय तथा विदुर के वर्णन भी आये हैं।

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त उदाहरणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाभारत की रचना वैदिक काल के पश्चात् तथा बौद्धों के साहित्य से पूर्व हुई थी।

1 अतः लगभग ४०० ई० पू० यह अवश्य ही विद्यमान था और तभी सूत्रसाहित्य में भी उद्धरण लिए गए हैं दूसरे जो पाली-साहित्य ३ या ४ शताब्दी ई०पूर्व रचा गया था उसका अधिक परिचय महाभारत से नहीं था।

(3) महाभारत की बहुत सी उपादेशात्मक कथाएँ वैदिक साहित्य से ली गई हैं तथा महाभारत की बहुत सी कथाएँ जैन तथा बौद्ध साहित्य में भी पाई जाती हैं।

4) ~~बौद्ध~~ भारतवासी कलियुग के प्रारम्भ में महाभारत का युद्ध बतलाते हैं जिसका समय ज्योतिष गणना के अनुसार 3102 ई-पूर्व सिद्ध होता है परन्तु विन्टरनिट्ज़ इस गणना को निराधार मानते हैं। उनका कथन है कि महाभारत का राजनैतिक इतिहास शिशुनाग वंश के मगधराज बिम्बसार तथा अजातशत्रु से आरम्भ होता है, जिनका वर्णन पुराणों में भी है और जो बुद्धकालीन भी है। परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य (321 ई०पू०) का वर्णन इसमें नहीं मिलता, जहाँ से कि भारतवर्ष का क्रमबद्ध इतिहास प्रारम्भ होता है। अतः महाभारत चन्द्रगुप्त मौर्य से पहले रचा गया होगा।

5) महाभारत का उल्लेख एक गुप्तकालीन शिलालेख में शतसाहस्री के नाम से मिलता है। अतः महाभारत का आधुनिक रूप कम से कम 1500 वर्ष पहले से अवश्य चला आ रहा है।

6) दह्लामन का एक साक्ष्य मिलता है कि पाणिनि को असली महाभारत का पता था। पाणिनि का समय ४०० ई० पूर्व माना ~~जाता है~~ गया है अतः इससे पहले ही महाभारत का बनना सिद्ध होता है।

7) आश्वलायन गृह्यसूत्र तथा बौधायन धर्मसूत्रों में महाभारत का उल्लेख मिलता है और ये सूत्र ५०० व ४०० ई० पू० के लगभग माने जाते हैं।

8) मेगस्थनीज ने अपने ग्रन्थ "इंडीका" (भारत) में लिखा है कि कुछ कहानियाँ ऐसी भी हैं जो केवल महाभारत में पाई जाती हैं।

9) महाभारत में ब्रह्मा को सब से बड़ा देव कहा है। पाली-साहित्य के आधार पर यह पाँचवीं शताब्दी से पूर्व की अवस्थाओं को घोषित करती है।

10) पाणिनीय सूत्रों में भारत का उल्लेख है और ये सूत्र ईसा से ७ शताब्दी पूर्व लिखे गए थे। अतः सभी अन्तर्बाह्य साक्ष्यों के आधार पर प्राचीन महाभारत का समय ८०० से ६०० ई० पू० के लगभग रहा है

Scanned with CamScanner

Subject matter of Mahabharat → वर्ण्य-विषय :- महाभारत के वर्ण्य-विषय में उसी काम से बराबर प्रक्षिप्त अंश मिलते हैं। इसका क्रमिक विकास तीन रूपों में हुआ है। पहले यह "जय" कहलाता था, उसके उपरान्त केवल "भारत" कहलाने लगा और बाद में "महाभारत" नाम पड़ा। इसका मूल रूप 'जय' नाम से ही प्रसिद्ध था, जैसा कि महाभारत के इस श्लोक से स्पष्ट है :—

" नारायणं नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ।
देवी सरस्वती चैव ततो जयमुदीरयेत् ।"

उस समय इसमें कुछ भी उपाख्यान नहीं थे। केवल कौरव-पाण्डवों के युद्ध का ही विस्तृत वर्णन था। मैकडानल के कथनानुसार असली महाभारत में कदाचित् 8800 श्लोक ही थे। इसके विकास की तीन विशिष्ट दिशाओं की ओर निम्नलिखित श्लोक में भी प्रकाश डाला गया है आदिपर्व में लिखा है :—

" मन्वादि भारतं केचिदस्तिकादि तथापरे ।
तथा परिचयाद्यन्ये विप्राः सम्यगधीयते ॥"

अर्थात् कुछ विद्वान् महाभारत का प्रारम्भ मनु उपाख्यान से कुछ आस्तिक उपाख्यान से और कुछ परिचय उपाख्यान से मानते हैं।

उक्त तीनों कालों में से प्रथम मनु के उपाख्यान से सम्भवतः "जय" का प्रारम्भ हुआ। परन्तु दूसरे "भारत" का प्रारम्भ सम्भवतः आस्तिक उपाख्यान से हुआ और इस काल में आकर श्लोकों की संख्या कदाचित् 2400 के लगभग हो गई। यह ग्रन्थ वैशम्पायन ने सर्प सूत्र में जनमेजय को पढ़ाया था। तीसरे काल में आकर इसका प्रारम्भ परिचय उपाख्यान से हुआ और इससे श्लोकों की संख्या एक लाख हो गई। इस काल में यह विस्तृत ग्रंथ सौति ने शौनक को सुनाया। इस ग्रन्थ में आकर पर्याप्त प्रक्षिप्त अंश सम्मिलित हो गए। अतः महाभारत न तो एक काल की रचना है और न किसी एक कवि द्वारा ही रचा अर्थात् (लिखा) गया है। अर्थात् महाभारत एक काल ~~की~~ और एक लेख की रचना नहीं है।

इसमें मुख्य कथा 18 पर्वों में विभक्त है तथा अन्त में "हरिवंश पुराण" परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित है। यह 18 ~~सौ~~ पर्वोंवाला महाभारत भी ~~अ~~ अत्यन्त प्राचीन है, क्योंकि आश्वलायन गृह्यसूत्रों में महाभारत तथा हरिवंश दोनों का उल्लेख मिलता है। साथ ही बोधायन सूत्र में तो विष्णुसहस्रनाम की परिपाटी का स्पष्ट अनुसरण

अनुकरण है। इसके १८ पर्वों के नाम क्रमशः इस प्रकार है (१) आदि (२) सभा (३) वन (४) विराट (५) भीष्म (६) द्रोण (७) कर्ण (८) शल्य (९) सौप्तिक (१०) स्त्री (११) शान्ति (१२) अनुशासन (१३) अश्वमेध (१४) आश्रमवासी (१५) मौसल (१६) महाप्रस्थानिक (१७) स्वर्गारोहण।

इस प्रकार आदि पर्व से स्वर्गारोहण पर्व तक कौरव-पाण्डवों के शैशव से लेकर अन्त में परीक्षित पर प्रजा-पालन का भार उत्तर पाण्डवों के स्वर्गारोहण तक का वर्णन है। 'हरिवंश' में १६ हजार श्लोक हैं और महाभारत के पूर्व भाग में ६५२६ श्लोक हैं इस प्रकार कुल एक लाख श्लोक महाभारत और हरिवंश दोनों को मिला कर हैं। "हरिवंश" तीन भागों में विभक्त है। प्रथम में श्रीकृष्ण के पूर्वजों का, दूसरे में श्रीकृष्ण के पराक्रमों का तीसरे में कलियुग की आगामी बुराइयों का वर्णन है।

महाभारत में उपाख्यान: महाभारत में मुख्य कथा के अतिरिक्त कुछ उपाख्यान भी आये हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं (१) शकुन्तलोपाख्यान (२) मत्स्योपाख्यान (३) रामोपाख्यान (४) शिवि उपाख्यान (५) सावित्री उपाख्यान (६) नलोपाख्यान। इनमें से पहला उपाख्यान तो आदिपर्व में आया है और शेष सभी उपाख्यान वनपर्व में मिलते हैं।

महाभारत में पौराणिक गाथाएँ: उपर्युक्त उपाख्यानों के अतिरिक्त कुछ पौराणिक गाथाएँ भी मिलती हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं- (१) जनमेजय के नागयज्ञ की कथा (२) समुद्रमंथन की कथा (३) कद्रू विनता की कथा (४) च्यवन ऋषि तथा सुकन्या की कथा (५) इन्द्र-वृत्रासुर की कथा। इन पौराणिक कथाओं के बारे में विंटरनिट्ज का मत है कि ब्राह्मणों ने अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए ये गाथाएँ गढ़ ली थी। इन गाथाओं के अलावा कुछ ख्यातियाँ भी मिलती हैं जो निम्नलिखित हैं :-

महाभारत में ख्यातियाँ: (१) मनु-प्रलय कथा (२) अग्नि की प्रलय कथा (३) मृत्यु कथा (४) ऋषि शृङ्ग का आख्यान (५) अगस्त्य की कथा (६) विश्वामित्र तथा वशिष्ठ के संघर्ष की कथा (७) उतंक की कथा तथा (८) नचिकेता की कथा। इन ख्यातियों का उद्देश्य ब्राह्मणों का क्षत्रियों पर प्रभुत्व स्थापित करना था।

इस प्रकार समस्त महाभारत ऐतिहासिक आख्यानों, कथाओं एवं ख्यातियों से परिपूर्ण है। इसमें उपदेशात्मक कथाओं की भरमार है तथा राजनीतिक के दाँव-पेच भी कथाओं द्वारा

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /201

सरल ढंग से समझाये गये हैं। धर्म, नीति तथा उपदेश पूर्ण दृष्टान्तों का बाहुल्य है। यह सारा काव्य कुछ उपजाति और वंशस्थ छन्दों में तथा अधिकांश श्लोक छंद में लिखा गया है। पुरानी गद्य में भी कुछ कहानियाँ हैं। इसके अतिरिक्त प्रवेशक वाक्य अधिक हैं, जैसे कृष्ण उवाच, भीष्म उवाच, आदि। सारे ग्रन्थ में धर्म का जो स्थूल रूप अंकित है, उसका सार नीचे लिखे श्लोक में आ गया है।

→ यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यस्तस्मिन् तथा
वर्तितव्यं सधर्मः।
मायाचारो मायया बाधितव्यः साध्वाचार साधुना: प्रत्युपेयः॥

अर्थात् असली धर्म यही है कि जैसे के साथ वैसा बना जाय। कपटी को कपट से खत्म करो और सीधे के साथ सिधाई का बर्ताव करो।

Paper I

Page No. ①
Date : / /201

प्रश्न 3 रामायण तथा महाभारत के रचना काल तथा वर्ण्य-विषयों की दृष्टि से इनकी तुलनात्मक समीक्षा कीजिए।

उत्तर

रामायण तथा महाभारत की कथावस्तु पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि रामायण आदि महाकाव्य है तथा महाभारत इतिहास है। रामायण में कथावस्तु की अपेक्षा काव्य चमत्कार अधिक मात्रा में विद्यमान है और उसमें एक ही राम का चरित्र तथा राम-रावण के युद्ध की घटना ही सब प्रकार से प्रमुख है। किन्तु महाभारत में कुछ अंशों को छोड़कर काव्यत्व नहीं के बराबर है। इसकी प्रधान-कथा में युद्धों के वर्णन के साथ-साथ तत्कालीन राजाओं के इतिवृत्तों का वर्णन विशेष रूप से मिलता है। इसमें प्राचीन-काल की अनेक अवान्तर कथायें मुख्य कथा की घटना से विशेष सम्बद्ध न होकर अपना पृथक-पृथक अस्तित्व भी रखती हैं। और वे अत्यधिक संख्या में विद्यमान हैं।

इन दोनों काव्यों का ~~भी~~ भौगोलिक विस्तार भी भिन्न है। रामायण में भारत की दक्षिणी सीमा विंध्य और दण्डकवन तक थी, पूर्वी सीमा विदेह राज्य तक थी तथा पश्चिमी सीमा सौराष्ट्र तक थी। परन्तु महाभारत के समय में आर्यावर्त का विशेष विस्तार हो गया था। इसकी पूर्वी सीमा गंगासागर संगम तक हो गई थी, दक्षिणी सीमा चोल, मलाबार प्रान्त तक थी। इतना ही नहीं लंका तक के राजा भी युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपहार लेकर आये थे। अतः लंका तक भारत का विस्तार हो गया था।

इन दोनों महाकाव्यों में से रामायण, एक कवि की कोमल एवं मार्मिक लेखनी का चमत्कार है। उसकी कविता में सरसता, स्निग्धता, ~~मु~~ मृदुलता तथा शब्द एवं अर्थ की मंजुलता का सामंजस्य है। यहाँ एक ही कवि के उद्गार हैं। परन्तु महाभारत में अपने 'जय' से 'महाभारत' तक के रूप निर्माण में कितने ही लेखकों का योग रहा है। रामायण के लिखने की चर्चा कहीं भी नहीं है। केवल लवकुश द्वारा गाये जाने का ही वर्णन मिलता है। परन्तु महाभारत के लिपिबद्ध करने की कथा प्रसिद्ध है। इसे गणेश जी ने लिपिबद्ध किया था। इसमें काव्य-सौन्दर्य की अपेक्षा इतिवृत्तात्मकता का ही प्राधान्य है और वर्णन वर्णनात्मक शैली ~~और~~ अधिक अपनायी गई है। सच्चे अर्थों में महाभारत काव्य की अपेक्षा कविता-बद्ध इतिहास-ग्रन्थ अधिक है।

Scanned with CamScanner

रचनाकाल की दृष्टि से दोनों महाकाव्यों में कौन प्राचीन है, इस विषय पर पर्याप्त मतभेद मिलता है। इस विषय में डाक्टर वेबर का कथन है कि रामायण में सुन्दर पद-विन्यास तथा सुबोध रचना मिलती है, जो महाभारत की अपेक्षा उसे अर्वाचीन सिद्ध करती है। इनकी दृष्टि में रामायण से महाभारत प्राचीन है, परन्तु भारतीय विचारधारा इसके सर्वथा विपरीत है क्योंकि वाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं और व्यास उनके पश्चात् हुए हैं। युग की दृष्टि से भी वाल्मीकि त्रेता-युग के कवि हैं क्योंकि उन्होंने त्रेतायुग में होने वाले श्रीरामचन्द्र की गुण-गाथा का वर्णन किया है और व्यास जी द्वापर युग के कवि हैं क्योंकि उन्होंने द्वापर-युग में होने वाले भगवान श्रीकृष्ण का वर्णन किया है। विष्णु अवतारों में राम के पश्चात् ही कृष्ण का अवतार माना गया है। अतः रामायण ही प्राचीन सिद्ध होती है।

डॉ० वेबर के उपर्युक्त मत के अतिरिक्त विंटरनित्ज का कथन है कि मूल रामायण अर्थात् द्वितीय कांड से पंचम कांड तक राम को विष्णु का अवतार नहीं माना गया है, अपितु वे एक श्रेष्ठ मानव हैं साथ ही अवतारवाद का सिद्धान्त कृष्ण के युग से ही चला है। अतः राम यदि विष्णु के अवतार हैं तो वे कृष्ण के बाद में ही हुए होंगे। बात यह है कि पाणिनी तथा पतंजलि ने अर्जुन, युधिष्ठिर तथा महाभारत का उल्लेख किया है, परन्तु राम का नहीं। अतः यह सिद्ध है कि रामायण महाभारत के बाद बनी है।

~~प्रो० जैकोबी का मत है कि रामायण की के आधार पर ही~~

प्रो० जैकोबी का मत है कि रामायण ही महाभारत से प्राचीन है और महाभारत की रचना रामायण के आधार पर हुई है, परन्तु विन्टरनित्ज ने इसके विरुद्ध कई प्रमाण दिए हैं। उनका कहना है कि रामायण में महाभारत की अपेक्षा काव्यांगों का अधिक वर्णन है, जिसमें कि ~~कालि~~ कालिदास जैसी काव्य छटा विद्यमान है। अतः वह महाभारत की अपेक्षा अर्वाचीन है। महाभारत में प्राचीनता के द्योतक "उवाच" आदि गद्य वाक्य मिलते हैं, जबकि रामायण में इनका उल्लेख नहीं है। रामायण में दरबारी शैली अधिक मिलती है। महाभारत के वर्णन में सर्वत्र क्षत्रियत्व का आभास मिलता है। कुन्ती, द्रौपदी आदि सभी नारियाँ वीर क्षत्राणी हैं। उनकी भी वीर उक्तियाँ ~~दर्पपूर्ण~~ दर्पपूर्ण हैं। वे अपमान सहना नहीं जानती हैं। दुर्योधन का द्रौपदी के प्रति

दुर्व्यवहार ही युद्ध का कारण बन गया है कीचक तथा जयद्रथवध भी इसी कारण हुए। जब कि रामायण में रावण सीता के साथ दुर्व्यवहार करता है, सीता से दुर्वचन भी कहता है, परन्तु सीता एक अत्यन्त सभ्य हिन्दू स्त्री की भाँति चुप रह जाती है। कौशल्या, कैकेयी आदि का भी यही हाल है। महाभारत का युद्ध उसके लेखक ने स्वयं देखा प्रतीत होता है, जबकि बाल्मीकि सुनी-सुनाई कथा को ही कहते हैं। राम-रावण युद्ध में संवादों अथवा कार्य-व्यापारों में उतनी उत्तेजना नहीं दिखाई देती, जितनी कि कर्ण, अर्जुन आदि के युद्ध में है। इन सभी बातों से स्पष्ट है कि महाभारत का निर्माण सभ्यता के विकास के आरम्भिक काल में हुआ था तथा रामायण सभ्यता के पूर्ण विकसित काल की रचना है। अर्थात् रामायण महाभारत की अपेक्षा पीछे रची गई है।

इस सम्बन्ध में एक बात उल्लेखनीय है कि महाभारत पर प्राचीन पश्चिमी भारत का तथा रामायण पर पूर्ण विकसित पूर्वीय भारत का प्रभाव दिखाई देता है। अतः इनमें काल-भेद न होकर सम्भवतः स्थान भेद है। इसी कारण जैकोबी का कहना है कि महाभारत रामायण के आधार पर है असङ्गत है, क्योंकि महाभारत में पश्चिमी लोगों ने भाग लिया था और रामायण में मुख्य घटना कोशल में घटी जहाँ पर कि बाल्मीकि मुनि का भी निवास-स्थान था।

परन्तु विंटरनित्ज के विरुद्ध भी यह कहा जा सकता है कि महाभारत के पात्रों में तथा घटनाओं में व्यवहारिकता अधिक है। द्यूत तथा राज्य-लोभ के कारण युद्ध आदि घटनायें व्यावहारिकता एवं विचार के क्षेत्र में हुए नहीं, जबकि रामायण में पत्थरों के तैरते हुए पुल पर से होकर रीछ-वानरों की सेना की सहायता से विजय प्राप्त करना, रावण के दस सिर का होना, आदि कुछ ऐसी ही घटनाएं हैं जो मानव-संस्कृति की उस प्राथमिक अवस्था की ओर संकेत करती हैं जब कि ऐसी घटनाओं में विश्वास करना स्वाभाविक था।

रामायण में आर्य-सभ्यता अपने विशुद्ध रूप में चित्रित है, उसमें उन म्लेच्छों का तनिक भी सम्पर्क नहीं दिखाई देता है जो एक भिन्न संस्कृति के अनुयायी थे। परन्तु महाभारत में लाक्षागृह के निर्माता पुरोचन का नाम आया है जो म्लेच्छ था। साथ ही कौरव तथा पाण्डवों के युद्ध में दोनों ही ओर से अनेक म्लेच्छ राजाओं ने भाग लिया था।

Scanned with CamScanner

उस समय लोग म्लेच्छ भाषा भी जानने लगे थे। विदुर ने उसी म्लेच्छ भाषा में युधिष्ठिर को संकेत रूप से लाक्षागृह की सूचना दी थी।

भौगोलिक दृष्टि से तो महाभारत का रामायण के पश्चात् होना ही सिद्ध होता है। रामायण में दक्षिण भारत केवल जंगली रीछ-वानर जातियों का निवास स्थान था। आर्य सभ्यता केवल विंध्याचल पर्वत तक ही सीमित थी, परन्तु महाभारत में दक्षिण भारत राजनीतिक दृष्टि से पर्याप्त व्यवस्थित हो चुका था तथा दक्षिण के राजा लोग राजसूय यज्ञ में उपहार लेकर भी आये थे।

रामायण की अपेक्षा महाभारत में युद्ध कला की भी पर्याप्त उन्नति हो गई थी। सीता स्वयंवर में एक धनुष का तोड़ देना ही वीरत्व का परिचायक था, परन्तु महाभारत में द्रौपदी-स्वयंवर के अन्तर्गत मछली की परछाईं देख कर उसका लक्ष्य भेद करना एक विशेष कौशल का द्योतक है। रामायण में लोग ईंट, पत्थर, वृक्ष आदि से ही लड़ते थे, परन्तु महाभारत ~~में सेनापति~~ में सेनापतियों की देखरेख में विविध शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित व्यूह रचना आदि का वर्णन है अतः महाभारत पश्चात् की रचना दिखाई देती है।

रामायण का समाज आदर्शवादी है। पिता, पुत्र, भ्राता, मित्र आदि सभी आदर्शवाद के पोषक हैं। परन्तु यह आदर्श महाभारत में दिखाई नहीं देता, भीम अपने बड़े भाई की आज्ञा मानने को तैयार नहीं। यहाँ पर विजय तथा राज्य-लाभ के लिए चोरी एवं असत्य भाषण में भी कोई पाप नहीं। अतः महाभारत की रचना रामायण से पीछे ही दिखाई देती है।

रामायण की नैतिक भावना का स्तर महाभारत की अपेक्षा ऊँचा है। परन्तु महाभारत में उस भावना का पर्याप्त ह्रास हो गया है। सीता जी को हनुमान अपनी पीठ पर लाने का प्रस्ताव करते हैं, परन्तु सीता जी पर-पुरुष के स्पर्श के दोष के कारण उसे स्वीकार नहीं करतीं। चरित्र की शुद्धता के लिए ही अग्नि-परीक्षा भी होती है, परन्तु द्रौपदी काम्यक वन में जयद्रथ द्वारा हरण कर ली जाती है और उसके पुनर्ग्रहण में कोई विरोध खड़ा नहीं होता। अतः उक्त भावना के आधार पर भी रामायण प्राचीन सिद्ध होती है।

साथ ही महाभारत में रामोपाख्यान आया है, जबकि रामायण में महाभारत की कथा का उल्लेख नहीं मिलता। इससे भी ~~सका~~ रामायण की प्राचीनता सिद्ध होती है। भले ही विंटरनित्ज़ मैक्डॉनल महाभारत के रामोपाख्यान को प्रक्षिप्त स्वीकार करें, परन्तु

Scanned with CamScanner

जैसे रामायण के प्रथम बालकाण्ड एवं सप्तम उत्तरकाण्ड को बहुत से विद्वान् वाल्मीकि मुनि द्वारा रचित नहीं मानते। उनका मत है कि ये दोनों काण्ड तथा पौराणिक उपाख्यान, जो बीच बीच में आये हैं, वे बाद में कुशीलवों अथवा अन्य कवियों द्वारा जनता की अभिरुचि के अनुसार जोड़े गए हैं।

रामायण के बालकाण्ड में अनेक ऐसी कथाएँ आई हैं जो ब्राह्मण धर्म से सम्बन्ध रखती हैं तथा जिनका उल्लेख महाभारत तथा पुराणों में मिलता है। इनमें से ऋषि शृंग, वशिष्ट, विश्वामित्र, शुनःशेप, रोहिताश्व-हरिश्चंद्र, वामन, कार्तिकेय, सगर-पुत्र आदि के उपाख्यान हैं जो मुख्य कथा के साथ जुड़े हुए हैं। सातवें काण्ड में भी महाभारत के समान धार्मिक कथाएँ हैं। इसकी मुख्य कथा तो सीता बनवास तथा लवकुश को राज्य देकर राम का स्वर्गारोहण है, परन्तु इसके साथ ही ययाति, नहुष, इन्द्र-वृत्रासुर, वशिष्ट, अगस्त की जन्मकथा, पुरूरवा उर्वशी आदि के कितने ही उपाख्यान और मिलते हैं। इसमें ब्राह्मण-धर्म-ग्रन्थों से सम्बन्धित शम्बूक की कथा का भी उल्लेख है। इस प्रकार कितने ही परस्पर विरोधी स्थल इन दोनों कांडों में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त प्रथम तथा सप्तम काण्ड की भाषा-शैली भी अन्य काण्डों से सर्वथा पृथक है। दूसरे इन दोनो काण्डों में राम को विष्णु का अवतार बतलाया है, जबकि अन्य काण्डों में राम केवल पुरुषोत्तम के रूप में ही वर्णन किये गए हैं। तीसरे, इन दोनों की कथा में उतना प्रवाह नहीं मिलता, जितना कि अन्य काण्डों में विद्यमान है। इनमें आगे हुए उपाख्यानों से कथा-प्रवाह टूट सा गया है। फिर भी महाभारत की अपेक्षा इसमें कम उपाख्यान मिलते हैं। विंटरनिट्ज तथा अन्य कितने ही विद्वान् उपर्युक्त कारणों से प्रथम तथा सप्तम काण्ड को प्रक्षिप्त ही मानते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि बालकाण्ड के प्रथम तथा तृतीय सर्ग में जो विषय-सूची दी गई है उसमें उत्तरकाण्ड का निर्देश नहीं है।

जैकोबी का तो यह मत है कि रामायण की समाप्ति की सूचना लंका काण्ड में ही मिल जाती है। अतः उत्तरकाण्ड तो निस्संदेह उत्तरकालीन है। साथ ही इसमें कुछ

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /201

ऐसी भी कथाएँ हैं, जिनका तनिक भी संकेत पहले काण्डों में नहीं मिलता है। फिर भी उत्तरकाण्ड अधिक बाद का नहीं हो सकता, क्योंकि बौद्धों के 'दशरथ जातक' में पाली भाषा के अन्तर्गत उत्तरकाण्ड के एक श्लोक का पूर्ण रूपान्तर मिलता है। यह जातक तीसरी शताब्दी ई० पूर्व का माना जाता है। अतः इससे सिद्ध है कि इस काल से पहले ही उत्तरकाण्ड की रचना हो चुकी थी।

इस आदि काव्य को "चतुर्विंशति सहस्री" (२४०००) भी कहते हैं। विद्वानों का कथन है कि इसमें गायत्री मंत्र के अनुसार प्रत्येक हजार श्लोक का प्रथम अक्षर गायत्री के अनुसार आरम्भ होता है। इस दृष्टि से पाश्चात्य मत निर्मूल जान पड़ता है। परन्तु पहले गायत्री वाली बात सिद्ध हो जाना आवश्यक है। दीपक सिद्ध करने वाले विद्वानों को इसकी एकरूपता में भी संदेह है क्योंकि बम्बई, बंगाल, मद्रास तथा काश्मीरी संस्करणों में पर्याप्त पाठ-भेद मिलता है। अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन-सा संस्करण विश्वसनीय तथा मूल रामायण के ठीक रूप को उपस्थित करता है।

बाह्य साक्ष्य :- रामायण महाकाव्य के विकास एवं रचनाकाल की ओर दृष्टिपात करने पर पता चलता है कि वैदिक साहित्य में 'रामायण' का उल्लेख नहीं मिलता जैसे 'राम-कथा' का कुछ आभास वैदिक साहित्य में है। परन्तु यह निश्चय रूप में नहीं कहा जा सकता कि उपनिषदों में प्रसिद्ध राजा जनक रामायण में वर्णित मिथिला मिथिलेश ही हैं। वेबर ने रामायण का सम्बन्ध यजुर्वेद से जोड़ने का प्रयत्न किया है तथा जेकोबी ने इन्द्र तथा वृत्रासुर के युद्ध को राम-रावण का युद्ध बतलाने का प्रयास किया है। ऋग्वेद में सीता का देवी के रूप में वर्णन मिलता है। सूत्र ग्रन्थों में सीता की पूर्ण मिलती है परन्तु वैदिक साहित्य की अस्पष्ट एवं रहस्यपूर्ण भाषा से किसी निश्चित तथ्य तक पहुँचना सर्वथा कठिनतर

बौद्ध तथा जैन साहित्य में भी राम-कथा का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। बौद्ध कवि कुमारलात (१०० ई०) की ~~कल्पना~~ कल्पनामण्डितिका में ऐसा उल्लेख आया है कि रामायण को सर्वसाधारण पढ़ते थे। जैनकवि विमलसूरि ने रामकथा को अपने "पउमचरिय" नामक प्राकृत भाषा के महाकाव्य में निबद्ध किया है। इस काव्य की रचना महावीर स्वामी की मृत्यु के ५३० वर्ष बाद लगभग ६२ ई० में हुई थी। महाकवि अश्वघोष ने ~~७८~~ ७८ ई० में अपने 'बुद्धचरित' नामक महाकाव्य में रामायण के सुन्दरकाण्ड की अनेक उपमाओं और उत्प्रेक्षाओं को निबद्ध किया है। बौद्धों के 'दशरथ जातक' में रामकथा पूर्ण रूप में विद्यमान है, जिसमें राम पंडित बुद्ध के पूर्वकालीन माने गये हैं। जातकों का समय ईसा से ३०० वर्ष पूर्व माना जाता है। अतः यह सिद्ध है कि रामायण इससे पूर्व ही सातों काण्डों में रची जा चुकी ~~है~~ थी और बौद्ध तथा जैन उसे न केवल राम-कथा के रूप में ही जानते थे अपितु सातों काण्डों के रूप में भी परिचित थे।

विंटरनित्ज ने बौद्ध ग्रन्थों तथा रामायण का पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित करने वाले पाश्चात्य विद्वानों के मत का उल्लेख करते हुए लिखा है कि डेविड महोदय ने बौद्ध ग्रन्थों तथा रामायण का आविर्भाव भारत के पूर्वीय प्रदेश में माना है। परन्तु उनका मत है कि रामायण बौद्धों के 'दशरथ जातक' के उपरान्त हुआ होगा क्योंकि 'दशरथ जातक' में दशरथ की मृत्यु का संदेश भरत द्वारा लाया जाना, राम तथा सीता का तर्पण ~~करना~~ करना, राम का भरत को समझाना, राम का १०००० वर्ष तक राज्य करना आदि वर्णित है। इस प्रकार पुरानी बौद्ध गाथाओं में केवल एक ही राम कथा का आना तथा उस कथा में भी बहुत से दैत्यों अथवा राक्षसों के वर्णन के रहते हुए भी रावण राक्षस तथा वानरों का वर्णन न रहने के कारण यह प्रतीत होता है कि ईसा से तीन-चार शताब्दि पूर्व जब त्रिपिटक साहित्य बना था। उस समय तक रामायण काव्य रूप में प्रस्तुत नहीं हुई थी, केवल राम कथा मौखिक रूप में ही विद्यमान थी। परन्तु 'दशरथ जातक' में उत्तरकाण्ड के एक श्लोक का पाली रूपान्तर रहना तथा रामायण में बौद्धों के बारे में तनिक भी संकेत न रहने के कारण यह सिद्ध होता है कि रामायण जातक कथा का आधार है तथा रामायण का

Scanned with CamScanner

रचना निर्माण जातकों के पूर्व ही हो चुका था। रामायण में एक स्थान पर 'बुद्ध' शब्द अवश्य आया है, परन्तु वह दूसरे अर्थ में और प्रक्षिप्त है।

डेविड की भाँति वेबर का भी यही कथन है कि समस्त रामायण का आधार बौद्ध साहित्य की एक रामकथा है। परन्तु उसका भी यह कथन असत्य प्रतीत होता है। कारण यह है कि बौद्धों के प्रारम्भिक तथा प्रामाणिक ग्रन्थ राम की उदारता, शील-सम्पन्नता तथा सत्य पुरुष भी मानते हैं, जो रामायण का प्रभाव स्पष्ट घोषित करते हैं। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि बौद्ध लोग अपने विकास के आरम्भिक काल में रामायण महाकाव्य को भले ही न जानते हों और यदि न भी जानते हों तो ब्राह्मण-धर्म के विरोधी होने के कारण राम का यथार्थ वर्णन न किया हो अथवा अपनी उदासीनता दिखाई हो। परन्तु इतना निश्चित है कि रामायण पहले ही बन चुकी थी। कुछ विद्वान छन्दों के आधार पर रामायण को बौद्ध ग्रंथों से बाद की रचना मानते हैं। किन्तु यह मत निराधार है। वैसे भाषा की दृष्टि से जेकोबी ने ही रामायण को बौद्धों से प्राचीन सिद्ध किया है। उसका मत है कि अशोक-काल में संस्कृत का प्रयोग न होकर पाली भाषा का ही अधिक प्रचलन था। उस समय संस्कृत बोलचाल की नहीं रह गई थी। केवल साहित्य की ही भाषा मानी जाती थी। अश्वघोष आदि बौद्धों ने इसीलिए अपने काव्य संस्कृत में रचे थे। इससे रामायण की प्राचीनता सिद्ध हो जाती है।

महाभारत के रचयिता, जिनका कि समय ४००ई० पूर्व माना जाता है, वे राम कथा से नहीं अपितु वाल्मीकि तथा उनके महाकाव्य रामायण से भी भलीभाँति परिचित थे, इसी कारण वनपर्व में रामोपाख्यान तथा हरिवंश में राम कथा का निर्देश है; परन्तु रामायण में कहीं भी महाभारत के पात्रों का उल्लेख नहीं मिलता। रामचन्द्रजी से सम्बन्धित स्थानों को महाभारत में तीर्थ-स्थान माना गया है, जैसे शृङ्गवेरपुर तथा गोप्रतार स्थानों का उल्लेख तीर्थ के रूप में ही महाभारत में आया है। इससे रामायण की प्राचीनता सिद्ध होती है।

अन्तःसाक्ष्य -> उपर्युक्त बाह्यसाक्ष्यों के अतिरिक्त अन्तःसाक्ष्यों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि पाटलिपुत्र नगर की स्थापना

Scanned with CamScanner

500 ई॰ पू॰ मगध नरेश अजातशत्रु ने की थी। बौद्ध ग्रंथों में इसका नाम "पाटलिग्राम" दिया गया है। यह नगर अजातशत्रु ने गंगा और सोन के संगम पर बसाया था। रामायण में राम गंगा और सोन शोण के संगम पर होकर नहीं जाते हैं परन्तु पाटलिपुत्र का उल्लेख नहीं मिलता। अतः रामायण को पाँच सौ (500) वर्ष पूर्व माना जा सकता है।

दूसरे, कोशल जनपद की राजधानी रामायण में अयोध्या बतलाई गई है। यद्यपि बौद्ध-ग्रन्थों में वह साकेत के नाम से प्रख्यात है। लव ने अपनी राजधानी श्रावस्ती में बसाई थी। अतः रामायण की रचना उस समय हो गई होगी। जबकि कोशल प्रदेश की राजधानी श्रावस्ती न होकर अयोध्या थी। श्रावस्ती के राजधानी बनने का उल्लेख आगे भी मिलता है कि कौशल-नरेश प्रसेनजित श्रावस्ती में ही राज्य करते थे। अतः रामायण प्राचीन है।

तीसरे → रामायण में विशाला और मिथिला दो स्वतन्त्र राज्यों का उल्लेख मिलता है। विशाला की स्थापना इक्ष्वाकु पुत्र विशाल ने की थी और मिथिला के राजा जनक सीताजी के पिता थे परन्तु बौद्धों के समय में ये दोनों राज्य वैशाली के रूप में सम्मिलित हो गये थे और यहाँ गणतन्त्र-शासन प्रणाली प्रचलित हो गई थी। अतः रामायण का बौद्धों के पहले माना सिद्ध होता है।

चौथे, भारतवर्ष का दक्षिण भाग रामायण में एक भयानक जंगली लोगों के निवास-स्थान के रूप में वर्णन किया गया है। यहाँ ऋक्ष-वानर आदि असभ्य एवं अर्ध सभ्य जातियाँ रहा करती थीं। आर्य सभ्यता के फैलने से पूर्व दक्षिण भारत की यही दशा थी अतः दक्षिण में आर्य सभ्यता के विकास से पूर्व ही रामायण की रचना हो चुकी थी।

पाँचवें, साक्ष्यों से पता चलता है कि रामायण के बालकाण्ड के अनुसार यह सिद्ध होता है कि उत्तरी भारत में आर्य जातियों के कोशल, अंग, कान्यकुब्ज, मगध, मिथिला आदि अनेक छोटे-छोटे राज्य थे। यह राजनीतिक स्थिति बुद्ध भगवान के पूर्व की ही है। अतः बौद्धों से पहले रामायण रची जा चुकी थी।

छठे, अंग्रेज विद्वान प्रो॰ सिलवेन लेवी ने इस विषय का गहरा अध्ययन किया है। उनका कथन है कि बौद्ध ग्रन्थ "सद्धर्मस्मृत्युपस्थान" निस्संदेह वाल्मीकि का ऋणी है। उक्त ग्रन्थ का जम्बूद्वीप वर्णन रामायण के दिग्वर्णन से पूर्णतः मिलता है। इसके अलावा इस

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /201

इस ग्रन्थ में नदियों, समुद्रों, देशों और द्वीपों का उल्लेख भी बिल्कुल उसी शैली में किया गया है जिस शैली में रामायण के अन्तर्गत मिलता है।

अन्त में हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि रामायण की रचना बौद्धों के पहले ही हो चुकी थी और उसका रचना काल 500 ई० पूर्व के लगभग माना जा सकता है। प्रो० वेबर ने रामायण में ही दो स्थानों पर आए हुए 'यवन' शब्द के आधार पर रामायण पर यूनानियों का प्रभाव सिद्ध किया है और उसे बाद की रचना ठहराया है, परन्तु प्रो० जैकोबी ने इस निश्चय में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी है कि जिन दो श्लोकों में यवन शब्द आया है वे दोनों ही 300 ई० के बाद की रचना है। यदि बाल्मीकि बुद्ध के बाद होते तो इस प्रकार सर्वप्रिय ऐतिहासिक महाकाव्य को प्राकृत में लिखते। अतः यह निर्विवाद सिद्ध है कि रामायण की रचना बुद्ध जी से पहले ही हुई थी और उसका रचना-काल 500 ई० पू० के लगभग है।